❶

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक
आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

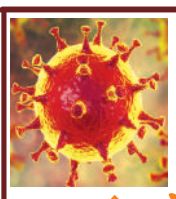

कोरोना संक्रमण
सतर्क रहें – सुरक्षित रहें
दो गज की दूरी बहुत जरूरी
स्वयं बचें – परिवार बचाएं– देश बचाएं

वर्ष 43, अंक 30 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 22 जून, 2020 से रविवार 28 जून, 2020
विक्रमी सम्वत् 2077 सृष्टि सम्वत् 1960853121
दयानन्दाब्द : 197 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
दूरभाष: 23360150 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.org/aryasandesh

भारत में नहीं चलेगी चीन की साहूकारी और जमींदारी

आर्यसमाज की अपील – प्रत्येक भारतीय करे चीनी सामान का पूरा बहिष्कार

चीन एक ऐसा चालाक देश है जो साहूकार की तरह पहले दूसरे देशों को अपना कर्जदार बनाता है और फिर उनकी कमजोरी का फायदा उठाकर ब्लैकमेल करता है। आज दुनिया के 150 ऐसे देश हैं जिन्होंने चीन से कर्जा ले रखा है। लेकिन भारत का चीन से ऐसा कोई लेन-देन का रिश्ता नहीं है। इसलिए चीन की साहूकारी और जमींदारी वाली चाल भारत में नहीं चल सकती। चीन की इस गंदी नीयत को उजागर करते हुए 26 जून 2020 को मीडिया में यह दिखाया गया कि उसने 2006 में जब यूपीए की सरकार थी तब राजीव गांधी फउंडेशन को 90 लाख का डोनेशन दिया था। हो सकता है उस समय चीन की कुछ ऐसी ही गलत नीयत रही हो, लेकिन यह मामला भारत देश से जुड़ा हुआ नहीं है बल्कि यह तो केवल एक राजनैतिक घराने की अपनी निजता की कहानी है। इसलिए भारत से चीन किसी भी स्तर पर जीत नहीं सकता और न ही उसकी कोई चालबाजी उसके काम आने वाली है। किंतु अफसोस इस बात का है कि हमारी पूर्व की सरकारों ने धोखेबाज और चालबाज चीन को जानते हुए भी भारत के बाजार में पैर जमाने की कैसे खुली छूट दे दी ?आज इसका नतीजा यह है कि चीन से व्यापारिक संबंध तोड़ने के लिए हमें काफी मशक्कत करनी पड़ रही है। लेकिन यह कार्य भी शुरू हो चुका है। भारतीयों के दृढ़ संकल्प और प्रबल इच्छा शक्ति की बदौलत इसमें भी हम चीन से जल्दी ही जीतने वाले है। इसके लिए केंद्र सरकार ने, भारतीय रेलवे ने, महाराष्ट्र सरकार ने और अन्य कई विभागों ने अच्छी खासी शुरूआत कर दी है। इस अच्छी पहल का आर्य समाज स्वागत करता है और संपूर्ण भारत राष्ट्र के नागरिकों से यह अपील भी करता है कि आओ इस देश भक्ति की मुहिम में साथ मिलकर चीन की जेब असली चोट करें।

आज देश का हर नागरिक चीन से बहुत गुस्से में है और होना भी चाहिए । क्योंकि जो व्यक्ति आज भी नहीं जागेगा फिर उसकी जागृति किस काम आएगी। इन दिनों कई शहरों में चीनी कंपनियों में निर्मित सामानों की होली जलाई जा रही है,लोग चीन के सामानों का बहिस्कार करने के लिए टोलियों में निकल रहे हैं, समाज में एक भावना प्रबल हो रही है कि हमें चीन के सामानों का प्रयोग बंद करना है। यह आवाज हमें विश्व स्तर तक पहुचानी है। क्योंकि चीन की ताकत उसका सैन्यबल नहीं है चीन की ताकत तो उसका बाजार ही है, चीनी सेना को तो हमारी भारतीय सेना सीमा पर ही हरा देगी लेकिन चीनी बाजार को तो हमें अपने देश के शहरों और बाजारों में हराना है। आज हर भारताय को सैनिक बनना होगा और चीनी सामानों के उपयोग से बचना होगा। इसके लिए देश में एक जन जागृति की लहर चलानी होगी, जो हम सबकी जिम्मेदारी है। क्योंकि जैसे-जैसे चीन का बाजार सिकुडेगा वैसे-वैसे चीन भी सुधरेगा। इसकी साहूकारी, जमीदारी वाली गंदी नियत और छिछोरी हरकत पर तभी लगाम लगेगी।

श्रीलंका का बंदरगाह 99 साल के लिए लीज पर चीन के पास है,चीन ने वहां 15 एकड़ जमीन भी खरीद ली है। पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर और चीन का कारिडोर को बनाने में चीन ने पूरी मदद की है। पाकिस्तान कभी भी चीन के खिलाफ नहीं जा सकता। नेपाल भी उसका कर्जदार है। इसीलिए नेपाल आज भारत के साथ ओछी हरकत करने पर आमादा है। कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि चीन चालाकी से चारों तरफ अपना आधिपत्य जमाने की फिराक में है। लेकिन भारत से पंगा लेना उसे जरूर महंगा पड़ेगा, हमारे जवानों की शहादत व्यर्थ नहीं जाएगी। चीन की करतूतों का जवाब देने के हर भारतीय आगे आए, अपना अपना कर्तव्य निभाए, चीनी सामानों का बहिष्कार करे।

– धर्मपाल आर्य, प्रधान

दिल्ली सभा के तत्त्वावधान में ब्रह्मयज्ञ तथा वैदिक योग साधना कार्यक्रम सम्पन्न

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा' के तत्त्वावधान में 'ब्रह्मयज्ञ तथा वैदिक योग साधना,' आर्य जगत के सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान डॉ. विनय विद्यालंकार जी के सान्निध्य में 15 जून से 21 जून 2020 तक कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम बहुत ही प्रभावशाली, ज्ञान की नई-नई जानकारियां देने वाला व प्रेरित करने वाला था। डॉ. विनय विद्यालंकार जी ने बहुत ही सुंदर ढंग से, वैदिक मंत्रों की व्याख्या की, जिसमें उन्होंने बताया की देवयज्ञ का पूरा विधि-विधान है, जिसमें मंत्र उच्चारण के साथ-साथ प्राणायाम द्वारा प्राण शक्ति बढ़ाते हैं, वृत्तियों का शमन होता है, विवेक व ज्ञान बढ़ता है, शारीरिक शक्ति का विकास होता है, अतुल उन्नति अर्थात मुक्ति मार्ग प्रशस्त होता है, पाप न हो पाए अर्थात् पाप दूर करने हेतु प्रेरणाएं प्राप्त होती हैं, जो परमपिता परमात्मा हमें प्रदान करता रहता है।

प्रतिदिन इस कार्यक्रम में विभिन्न आर्य समाजों के अधिकारी, सदस्यगण तथा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के माननीय ओजस्वी प्रधान श्री सुरेश चंद आर्य जी भी सम्मिलित होते रहे तथा उन्होंने भी अपना आशीर्वाद सभी को प्रदान किया। रविवार 22 जून को आर्य गुरुकुल तिहाड़ गांव से यज्ञ द्वारा यह कार्यक्रम आरंभ हुआ, तदुपरांत डॉक्टर विनय विद्यालंकार जी ने संक्षिप्त उद्बोधन दिया तथा सभी श्रोताओं की शंकाओं का समाधान बहुत सुंदर ढंग से किया।

आदरणीय श्री धर्मपाल आर्य जी, प्रधान दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, जो कि महर्षि देव दयानंद जी के कार्यो हेतु समर्पित हैं, ने अपना आशीर्वाद प्रदान किया। यह कार्यक्रम श्री विनय आर्य, महामंत्री दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के नेतृत्व में आयोजित किया गया। इसका संयोजन बहुत ही कुशल तरीके से निम्न आर्य साथियों में किया। श्रीमती रचना

– शेष पृष्ठ 7 पर

अपने तथा बच्चों के जीवन की सर्वांग उन्नति की कला और विज्ञान

कार्यक्रम

सोमवार 22 जून से शनिवार 27 जून, 2020
प्रतिदिन प्रात: 07.35 से 08.30 बजे तक
रविवार, 28 जून, 2020
यज्ञ : प्रात: 08.30 से 09.00
उद्बोधन : प्रात: 09.00 से 10.00

-: सान्निध्य :-
आचार्य वागीश जी

शंका समाधान
कृपया अपनी शंकाएं शनिवार 27 जून प्रात: तक श्री नरेंद्र अरोड़ा मो.न. 93125 95700 को भेज देवें। समाधान आचार्य जी द्वारा रविवार को दिया जाएगा।

फेसबुक से लाइव जुड़ें
fb.com/thearyasamaj

जूम एप्प लिंक से जुड़ें
https://bit.ly/3eBTevC

आयोजक
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

वेद-स्वाध्याय

उठो और जागो

उदीर्ध्वं जीवो असुर्न आगादप प्रागात्तम आ ज्योतिरेति।
आरैक्पथां यातवे सूर्यायागन्म यत्र प्रतिरन्त आयुः।। ऋ० १/११३/१६
ऋषि : **कुत्स आंगिरसः**।। देवता - **उषाः**।। छन्दः **भुरिक्पंक्तिः**।।

शब्दार्थ - हे मनुष्यों! **उदीर्ध्वम्** = उठो, **नः** = हमारे लिए **जीवः** = जीवन **असुः** = प्राण **आगात्** = आ गया है, उदय हो गया है। **तमः** = अन्धकार **अप प्रागात्** = हट गया है और (यह देखो) **ज्योतिः** = उषा की ज्योति **आ एति** = आ रही है। इस ज्योति ने **सूर्याय** = सूर्य के **पन्थाम्** = मार्ग को **यातवे** = चतने, पहुंचने के लिए **आरैक्** = खोल दिया है, **यत्र** = यहां (जीवनशक्तियां) **आयुः** = जीवन को **प्रतिरन्त** = बढ़ाती ही हैं (उस अवस्था में हम) **आ अगन्म** = पहुंच गए हैं।

विनय - उठो, उठो हे मनुष्यों! उठो, जागो, देखो यह प्रभात हो रहा है, अंधकार को चीरकर उषा की किरण निकल रही है। हमें जीवन प्रदान करते हुए, हममें नव प्राण का संचार करती हुई यह दिव्य ज्योति उदय हो रही है। इस ज्योति को पाने के लिए जागो। भाइयो! अनुभव करो कि हमारे जीवन में आज फिर एक नवप्रभात हुआ है। अब तक हम अंधेरे में थे, एक निष्प्राण और जीवन हीन जीवन बिता रहे थे। इस ज्योति का पवित्र संस्पर्श हममें आज जो नया चेतन्य उत्पन्न कर रहा है वह हमारे लिए अनुभूतपूर्व है। ओहो, इस ज्योति ने तो हम उस परम ज्योति सूर्य का मार्ग भी खोल दिया है। इस आत्मा ज्योति ने उदित होकर परमात्मा ज्योति तक पहुंचने का रास्ता भी साफ कर दिया है। हम अब उस अवस्था में पहुंच गए हैं जहां वृद्धि ही वृद्धि है। जहां क्षय और ह्रास का डर नहीं रहा है। इस आत्म प्रकाश में वे जीवन शक्तियां है जिन्हें पाकर अब हम दिनोंदिन उन्नत होते जाएंगे, बढ़ते, विकसित होते जाएंगे। हमारा जीवन, हमारा ज्ञान, हमारा मनुष्यत्व, हमारे सब गुण आगे-आगे बढ़ते ही जाएंगे। यह जीवन की ज्योति इस नवप्रभात के आगे उत्तरोत्तर बढ़ती जाएगी। इसलिए उठो, इस आत्म प्रकाश को देखो, यह देखो, उषा देवी नवजीवन का संदेश लाती हुई हमें जगा रही है।

-: साभार : वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

ईसाई मिशनरीज की गहरी साजिश का पर्दाफास

देश में फैल चुके हैं साइलेंट शिकारी

.....ये लोग शोर नहीं करते चुपचाप कब लोगों को शिकार बना लेते हैं पता ही नहीं चलता। ये साइलेंट शिकारी हैं। इनके मुख्य शिकार गरीब तबका, महिलायें और बच्चें होते हैं। जैसे पिछले दिनों एक गैर सरकारी संगठन 'बचपन बचाओ आंदोलन' द्वारा दक्षिण-पश्चिम दिल्ली के छावला स्थित ताजपुर गांव में अवैध रूप से चल रहे इमेन्युअल ऑरफेनेज चिल्ड्रन होम में छापेमारी के दौरान 54 बच्चों को मुक्त कराया गया था। इनमें 43 लड़के तथा 11 लड़कियां बताई गयी थीं। इन बच्चों को जब इनके माता-पिता के सुपुर्द किया गया तो खुलासा हुआ कि कुछ बच्चों के माता-पिता हिन्दू थे, जबकि उनके बच्चे ईसाई बन चुके हैं। 3 से 17 वर्ष की आयु वाले ये सभी बच्चे उत्तर प्रदेश, मणिपुर, बिहार और झारखंड से लाए गए थे। .....

एक बड़ा प्रसिद्ध कथन है कि प्रशांत महासागर की तलहटी से सारा कीचड़ निकाल कर अगर मिशनरियों पर फेंक दिया जाए तो भी मिशनरियों के मुकाबले कीचड़ ही साफ दिखाई देगी। भारत में कान्वेंट स्कूलों ने पहले किताब बदलीं, यूरोप की कहानियां पाठ्यक्रम में घुसा दी, फिर बच्चों की ड्रेस बदली लडकियों को सलवार कमीज से स्कर्ट में इसलिए लाए, ताकि ये लड़कियां आगे चलकर सम्मान के साथ नग्नता स्वीकार कर लें। इसके अलावा कान्वेंट स्कूलों में दैनिक प्रार्थना बदली। अनुशासन के नाम पर नियम-कायदे-कानून बदले और अब बच्चों के नाम बदल रहे हैं। हो सकता है कल आपके घर से कान्वेंट स्कूल में पढ़ने वाले किसी दीपक या रोहित का नाम रोबर्ट या पीटर हो जाए तो चौंकना मत। ये सब एक घिनोनी साजिश के तहत किया जा रहा है।

अक्सर कहा जाता है कि शिक्षा दान है, जितना किया जाए कम है। लेकिन दान और ज्ञान के नाम पर अगर कोई आपकी धार्मिक, सामाजिक पहचान ही छीन ले? यानि दसवीं की अंकतालिका और प्रमाणपत्र यानी जिंदगी भर की पहचान ही बदल दे, इसके बाद अगर आपकी जेब में पैसे और आपकी पहुँच है तो आप अपना पुराना नाम वापिस पा सकते हैं। लेकिन अगर ये दोनों चीजें आपके पास नहीं है तो आपको रोबर्ट और पीटर के नाम से जीवन जीना पड़ेगा।

मिशनरीज की ऐसी अनेकों करतूत हर रोज अखबारों में पढने को मिल जाएंगी लेकिन इस मामले का सबसे बड़ा खुलासा 2015, 2018 और कुछ जगह 2019 में हुआ था। साल 2015 में गुडविल पब्लिक स्कूल में पढ़ने वाले बच्चों की सीबीएसई की अंकतालिका हाथ में आने के बाद जब इस गोरखधंधे का खुलासा हुआ, तो बच्चों को एक कागज थमा दिया गया जिसके अनुसार नाम बदलने के पीछे मतांतरण की मंशा न होने की बात कही गयी थी। यह मामला देशभर में ईसाई फंदे के शातिर हथकंडों की कई कड़ियां खोल गया था।

इसमें सबसे ज्यादा शिकार कौन लोग हो रहे हैं? एक-एक कड़ी समझिए। अमीर बच्चों की शिक्षा के साथ आधुनिकता के नाम पर संस्कार बदल दिए जाते है, और गरीब बच्चों के अंकतालिका में नाम। जैसा पिछले दिनों दिल्ली एक बाल गृह में हुआ था। जहां रहने वाले बच्चों के स्कूल प्रमाणपत्र में माता-पिता के नाम की जगह ईसाई संचालक ने अपना और अपनी पत्नी का नाम दर्ज कराया हुआ था। हैरानी की बात यह है कि ये सभी बच्चे संचालक को फादर ही बोलते थे।

इसी तरह दूसरा एजेंडा देश के विभिन्न हिस्सों में न केवल ईसाई पंथ के अनुसार बच्चों से प्रार्थना कराई जाती है, बल्कि बच्चों के गले में क्रास का लॉकेट तक पहनाया जाता है। ज्यादातर बच्चे दिल्ली, बिहार, उत्तर प्रदेश, पश्चिम बंगाल, झारखंड, मणिपुर और ओडिशा से लाए जाते हैं। दरअसल ऐसा इसलिए किया जा रहा है। जिससे भविष्य में बड़े होने पर बच्चों को उनके ईसाई माता-पिता का नाम मिलने पर ईसाई ही समझा जाएगा। साल 2015 में पांचजन्य पत्रिका में इस खेल का खुलासा करते हुए एक विस्तृत शोध छपा था।

ये खेल चलता कैसे है? असल में गरीब बच्चों को पढ़ाने के नाम पर गैर सरकारी संगठन या बालगृह वाले प्रत्येक बच्चे की शिक्षा व उसकी देखरेख के नाम पर विदेशों से फॉरिन कंट्रीब्यूशन रेगुलेशन एक्ट यानि एफ.सी.आर.ए. - 2010 के माध्यम से आर्थिक मदद लेते हैं। यानि ईसाई मिशनरीज भारत में इन संगठनों को मोटा पैसा देती हैं। बच्चों को पढ़ाने की आस में उनके गरीब, अनपढ़ माता-पिता भी निश्चिन्त होकर उन्हें देखरेख के लिए सौंप देते हैं, लेकिन ये लोग बड़ी चालाकी से उनकी जगह स्वयं बच्चों के माता-पिता बन जाते हैं।

बालगृह में प्रार्थना करते-करते बच्चे एक दिन स्वयं ईसाई बन जाते हैं क्योंकि स्कूल रिकार्ड में उनके असली माता-पिता यानि हिन्दू का नाम नहीं, बल्कि ईसाई माता-पिता का नाम रहता है। यही कारण है कि कई बार बच्चों को नाबालिग से बालिग होने पर हिन्दू धर्म से ईसाई बनने का पता ही नहीं चलता है कि वो कब ईसाई बन गये!

आखिर इनका पूरा खेल समझिये। अक्सर जब अन्य मत वाले किसी एक व्यक्ति या परिवार की घर वापिसी होती है तो सोशल मीडिया में उस खबर बड़े तरीके छापा जाता है। वापिसी कराने वाले भी खूब सेल्फी ले लेकर डालते हैं लेकिन ये लोग शोर नहीं करते चुपचाप कब लोगों को शिकार बना लेते हैं पता ही नहीं चलता। ये साइलेंट शिकारी हैं। इनके मुख्य शिकार गरीब तबका, महिलायें और बच्चें होते हैं। जैसे पिछले दिनों एक गैर सरकारी संगठन 'बचपन बचाओ आंदोलन' द्वारा दक्षिण-पश्चिम दिल्ली के छावला स्थित ताजपुर गांव में अवैध रूप से चल रहे इमेन्युअल ऑरफेनेज चिल्ड्रन होम में छापेमारी के दौरान 54 बच्चों को मुक्त कराया गया था। इनमें 43 लड़के तथा 11 लड़कियां बताई गयी थीं। इन बच्चों को जब इनके माता-पिता के सुपुर्द किया गया तो खुलासा हुआ कि कुछ बच्चों के माता-पिता हिन्दू थे, जबकि उनके बच्चे ईसाई बन चुके हैं। 3 से 17 वर्ष की आयु वाले ये सभी बच्चे उत्तर प्रदेश, मणिपुर, बिहार और झारखंड से लाए गए थे।

इसी तर्ज पर जब पिछले कुछ समय पहले दक्षिण-पश्चिम जिले में इमेन्युअल, उम्मीद, आशा मिशन, प्रेम का जीवन समेत हाउस ऑफ होप नाम के बालगृह को निरीक्षण के दौरान अवैध रूप से चलने पर बंद किया जा चुका है। ये सभी बिना पंजीकरण के चलाए जा रहे थे, इनमें से "हाउस ऑफ होप" का संचालक निरीक्षण की सूचना मिलते ही बालगृह बंद कर फरार हो गया था। इसके बाद आशा मिशन होम से 4 और उम्मीद संस्थान से 17 लड़कियों को मुक्त कराया गया था। ईसाई मिशनरी द्वारा संचालित बालगृह में रहने वाले बच्चों से तीन-तीन घंटे प्रार्थना कराई जाती है, गले में क्रास का लॉकेट पहनाया गया था और उन्हें चर्च भी ले जाया जाता था।

अब ये देखिये कि ये लोग इस काम को अंजाम किस तरीके से देते हैं और ये बच्चें इनके पास कहाँ से आते हैं। दरअसल अनेकों राज्यों में इनके आदमी राज्यवार फैले होते हैं। गरीब वर्ग के लोगों या विधवाओं पर निगरानी रखकर सुनियोजित तरीके से उनके बच्चे को शिक्षा मुहैया कराने का प्रलोभन देते हैं और उसके बाद बच्चों को दिल्ली ले आते हैं।

- शेष पृष्ठ 4 पर

कथावाचकों की अज्ञानता के दुष्प्रभावों से सावधान

क्या महिलाएं कर सकती हैं गायत्री मन्त्र जाप

.....असल में देखा जाये स्वयं का अध्ययन एवं योग्य गुरु के अभाव में हिन्दू समाज और कथावाचक भटक गये है, आम तौर पर लोगों को पता ही नहीं चलता है कि संत किसे कहते हैं और महात्मा किसे, विद्वान किसे कहते हैं और तपस्वी किसे, साधक किसे कहते हैं और कथावाचक किसे। दरअसल आज जितने कथावाचक हैं वे ही संत हो गये और वही महात्मा भी और इसका फायदा उठाकर ये कथावाचक कमाई कर रहे है और अपने धर्म का नाश भी। कथाओं में शेरो शायरी, चुटकुले और मनोरंजन के साधन के अल्लाह, मौला, नमाज, अजान करके भीड़ जुटाने लगे ताकि हर तरह की सोच वाले आकर इन्हें थैला भेंट करें।.....

अगर एक किसी रिक्शा चालक को विमान का पायलट बना दिया, अगर किसी चारपाई बनाने वाले को उपग्रह बनाने को दे दिया जाए और अगर कक्षा तीन के छात्र को किसी विश्वविद्यालय का कुलपति बना दिया जाये तो नतीजा क्या होगा? शायद आप बखूबी जानते हैं, किन्तु इस देश में आज दो काम ऐसे हैं जिन्हें कोई भी कर सकता है एक तो टिकटोक पर वीडियो बनाना और दूसरा कथावाचक बनना। देवी चित्रलेखा, मुरारी बापू, चिन्म्यानंद जैसे लोग कम थे कि अब एक और कथा वाचक मैदान में आ गये। अनगिनत माला गले में डाले इन महाराज का नाम है स्वामी राघवाचार्य।

स्वामी जी कथा कर रहे हैं और बीच में कह रहे हैं कि स्त्रियों को गायत्री मंत्र का जाप करने का कोई अधिकार नहीं है। महाराज ने तर्क देते हुए इसका कारण भी बताया कि स्त्रियों का यज्ञोपवित संस्कार नहीं होता। इस कारण वो गायत्री का जाप नहीं कर सकती।

हमें नहीं पता ये लोग कौन-से स्कूल में यह सब पढ़कर आते हैं, इनके गुरु घंटाल कौन होते हैं! इन्हें अपने सनातन वैदिक धर्म का ज्ञान कितना होता है, कितना अपनी मूल संस्कृति का। इनके प्रवचन सुनकर लगता है कि जब इन्हें अपने धर्म और संस्कृति का मूल ज्ञान नहीं है तो ये कोई पदार्थों में मिलावट का काम क्यों नहीं खोल लेते। उसी में मिलावट कर लें। कम से कम फिर धर्म में मिलावट होने से तो बच जाएगी। क्योंकि जब हम इनका ये मिलावटी ज्ञान पढ़ते और सुनते हैं तो अब इन पर गुस्सा नहीं, बल्कि दया आने लगी है कि अब तो रुक जाओ। ये अपना स्वयं निर्मित ज्ञान कब तक जनता के बीच बांटेंगे और इस महान वैदिक धर्म, और इस महान सनातन संस्कृति का नाश कब तक करेंगे।

सिर्फ राघवाचार्य ही नहीं पिछले दिनों एक लाइव कार्यक्रम में एक ज्योतिषी भी बोल रहा था कि गायत्री मंत्र का जाप करने से महिलाओं के अन्दर पुरुषों के गुण आने लगते हैं, वह सिर्फ यहीं नहीं रुका बल्कि आगे बोला कि उनके चेहरे पर दाड़ी-मूंछ के रूप में अवांछित बाल आने लगते हैं, उनके हार्मोन्स में बदलाव होने लगते हैं और वे देखते-देखते पुरुष बन जाती हैं। अब इस तकनीक को सुनकर हँसी भी आई कि अगर ऐसा संभव होता है तो भारत में इतने बड़े स्तर पर कन्या भ्रूर्ण हत्या नहीं होती। जिनके घर तीन-तीन बेटी हैं और बेटा नहीं है वे एक बेटी को गायत्री मन्त्र का जाप करा देते तो एकाध तो बेटा बन जाता, बाकि दो बेटी रह जाती।

इनके कथन पर हँसी से अधिक तो दु:ख आया और उस ज्योतिष की मानसिकता पर तरस भी। क्योंकि कई बड़े शोध में ये साबित हो चुका है कि गायत्री मंत्र के जाप से मानसिक शांति आती है, गुस्सा कम आता है और बुद्धि तेज होती है। हर रोज कुछ समय तक लगातार गायत्री मंत्र पढ़कर बौद्धिक क्षमता का अनंत विस्तार किया जा सकता है।

यानि अपने दिमाग की ताकत को बढ़ाया जा सकता है। एम्स ने अपनी रिसर्च में एमआरआई के जरिए दिमाग की सक्रियता की जांच करके इस बात की पुष्टि की है कि गायत्री मंत्र पढ़ने से दिमाग की शक्ति का विस्तार होता है।

गायत्री मंत्र ऋग्वेद के तीसरे मंडल के 62वें सूक्त में मौजूद 10वां श्लोक है। इस मंत्र में ईश्वर का ध्यान करते हुए ये प्रार्थना की गई है कि हे ईश्वर, हम तेरे तेज स्वरूप का ध्यान करते हैं, तू हमारी बुद्धियों को प्रकाशित कर। वेदों पर खोज करने वाले भारत और दुनिया के विद्वानों ने गायत्री मंत्र को ऋग्वेद के सबसे प्रभावशाली मंत्रों में से एक माना है। हमारे देश में सदियों से लोगों के बीच ये मान्यता है कि विद्यार्थियों को गायत्री मंत्र का पाठ करना चाहिए, क्योंकि इससे दिमाग तेज होता है।

लेकिन ये लोग कहते है स्त्री को अधिकार नहीं है तो शिवजी महाराज के साथ माता पार्वती जी विराजमान है, और मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम जी के साथ माता सीता जी विराजमान है। इसके अलावा समय-समय पर अनेकों वैदिक विदुषियाँ भी यहाँ पर पैदा हुई हैं। मैत्रेयी, लोपमुद्रा घोषा, गार्गी समेत अनेक ऋषिकाओं का वर्णन भी हमारे शास्त्रों मिलता है। कही भी वैदिक धर्म में महिलाओं के लिए ऐसी कोई बात नहीं लिखी। बल्कि आज जो ये कथावाचक कह रहे हैं वैदिक विद्वान और गुरुकुलों की आचार्या ही इसका खंडन कर रही हैं।

असल में देखा जाये तो स्वयं का अध्ययन एवं योग्य गुरु के अभाव में हिन्दू समाज और कथावाचक भटक गये हैं,

- शेष पृष्ठ 7 पर

काल्पनिक किन्तु अत्यन्त प्रेरक वैदिक रचना

महासंग्राम की अनसुनी गाथा

(जब पहुंचा कोरोना वायरस यम के दरबार)

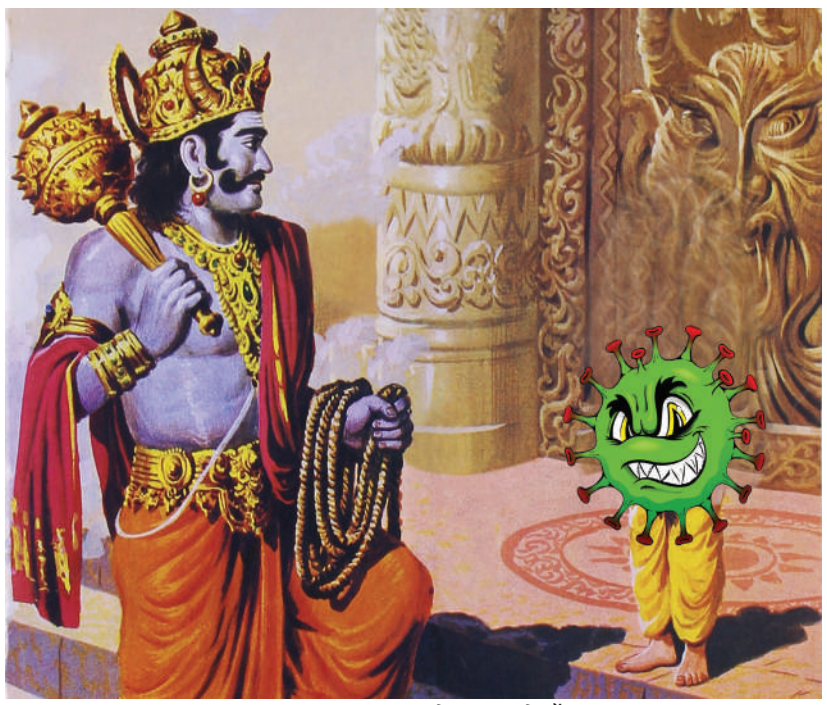

स्थान - यमलोक।
समय - मध्यरात्रि।
दृश्य-सिंहासन पर यमराज सुशोभित।
आसपास यमदूतद्धभयंकर जानवर,विषैले जीवाणु सरीसृप आदि।

यमराज- मेरे विश्वासपात्र दूतो! मुझे यह जानकर बहुत खुशी हो रही है कि आज मनुष्य के मृतशरीर से मुक्त होकर आये हुए जीवों से यमलोक गुलजार हो रहा है। मैं आप सब को बधाई देता हूं।

यमदूत- यमराज की जय हो!

यमराज- मुझे एक-एक करके बताओ, यमलोक में रौनक बढ़ाने के पुनीत कार्य का असली हीरो कौन है?

छिपकली- महाराज! मैंने अपने जीवन की परवाह न करते हुए अपना सारा जहर मनुष्य के खाने में उड़ेल दिया, जिससे इंसानों की मृत्यु हुई।

मच्छर- इस पुण्यकार्य का असली हकदार मैं हूं महाराज! मैंने ही मलेरिया, डेंगू, चिकनगुनिया जैसे रोगों का बड़े पैमाने पर विस्तार किया, जिससे ज्यादा लोग मर रहे हैं।

बिच्छू - महाराज! दूषित पर्यावरण से जहर इकट्ठा कर मैंने मनुष्यों को काटा जिससे उन की मृत्यु अधिक हुई।

चमगादड़- नहीं महाराज! मेरे शरीर में पहले से ही रोग के असंख्य कीटाणु मौजूद हैं। इस समय मनुष्य का एक वर्ग हमें मारकर खा रहा है, जिसके कारण वह तो मर रहा ही है उसके शरीर से निकले विषैले कीटाणुओं ने अन्य लोगों पर आक्रमण कर दिया जिस के कारण ज्यादा लोग मर रहे हैं।

सर्प- महाराज! आप तो जानते ही हो कि इस संसार में मुझसे बड़ा जहरीला और कोई नहीं। मेरे डसने से ही अधिक लोग मर रहे हैं।

यमराज- हूं! अरे भाई तुम कौन हो? तुम इतने छोटे हो और कोने में बैठे हो, दिख भी नहीं रहे हो। मैंनें पहले तुम्हें कभी नहीं देखा। क्या इस मृत्युपर्व में तुम्हारा भी कोई हाथ है?

कोरोना- महाराज! मैं कोरोना हूं। इससे पहले मेरा इस सृष्टि में कोई अस्तित्व ही नहीं था। इसलिए आप ने मुझे पहले नहीं देखा।

यमराज- तो क्या इस मनुष्य की विनाशलीला में तुम्हारी कोई भागीदारी है?

कोरोना- महाराज! 'छोटा मुंह-बड़ी बात'। मैं खुद अपनी प्रशंसा क्या करूं। इस भयंकर नरसंहार में मेरी ही भूमिका है।

सर्प आदि- ए छोटे! इतनी भी अपनी तारीफ मत करना। अभी अभी यहां आये हो। कहीं लेने के देने न पड़ जाये। महाराज को सब पता है, कौन कितने पानी में है।

यमराज- अभी आप लोग चुप भी रहो। कहने दो उसको, क्या कहना चाहता है। भाई छोटे! तुम यह तो बताओ कि तुम खुद कहते हो कि 'मैं पहले नहीं था, फिर तुम कहां से आये हो?'

कोरोना- महाराज! मुझे बनाया गया है। मैं इस सृष्टि में पहले नहीं था। मुझे तो इंसानों ने ही बनाया है महाराज!

यमराज- इंसानों ने बनाया?वो कैसे?

कोरोना- हां प्रभु! आजकल इंसान एक दूसरे को नीचा दिखाने के लिए तरह तरह का प्रयोग कर रहा है। दूसरे पर अपना आधिपत्य जमाने के लिए अनेक हथियारों का भी निर्माण कर रहा है।

- शेष पृष्ठ 7 पर

कोरोना, तूफान और बार-बार भूकंप की आहट - प्रकृति की आवाज सुनिए

.....हम सब कार्बन के कंधों पर बैठे हैं और हमारे विकास के स्वर्णिम महल का भार भी कार्बन ही उठा रहा है। हमने कार्बन को ही विकास का आधार बना रखा है, प्रकृति कार्बन को जहां तक संभव है दबाकर और छिपाकर रखती है क्योंकि वह इसका खतरनाक चरित्र जानती है। हम उसे खोजकर बाहर निकाल लेते हैं, कोयला निकालकर बिजली बनाते हैं तेल निकालकर कार और हवाई जहाज उड़ाते हैं, धरती से आकाश तक फैले हुए कार्बन का कारण हम मनुष्य ही हैं। हमारे इंजीनियर रात-दिन इस हमले का मुकाबला करने में लगे रहते हैं लेकिन कर नहीं पाते क्योंकि यह उनकी क्षमता से कहीं बड़ा काम है। प्रकृति अपनी क्षमता के भीतर अपने संरक्षण के लिए पूर्ण सक्षम है, इसलिए आज हमें प्रकृति के संदेश को सुनना चाहिए और कार्बन से लड़ने के लिए यज्ञ विधि को अपनाना चाहिए। इसलिए जलवायु को ठीक करने की यज्ञीय परंपरा को अपनाईए। यज्ञ ही एक ऐसा साधन है जिसके माध्यम से हम हर तरह की आपदा को दूर कर सकेंगे।.....

संसार की तीन अनादि सत्ताओं में आज प्रकृति की मार से सारा विश्व कंपकंपा रहा है। भारत में लगातार कोरोना महामारी का प्रकोप इतना बढ़ता जा रहा है कि यहां 5 लाख के करीब रोगी हो गए हैं और यह संख्या निरंतर बढ़ती जा रही है किंतु भारत में केवल कोरोना संक्रमण ही चिंता का विषय नहीं है। यहां पर बार-बार भूकंप का आना, समुद्री तूफानों का आना, आसमानी आफत के रूप में बिजली गिरने से सैकड़ों लोगों की अचानक जान चले जाना, देश की सीमाओं पर दुश्मनों का घात लगाकर हमला करना, आतंकवादी गतिविधियों का बढ़ना, इस तरह की तमाम समस्याएं आज हमारे सामने चुनौती बनकर खड़ी हैं। आइए, इन समस्याओं में से कोरोना, भूकंप और तूफान को लेकर प्रकृति हमें क्या संदेश दे रही है उसे सुनने और समझने की कोशिश करें तथा अपने जीवन में कुछ परिवर्तन करके ईश्वरीय नियमों का पालन करें।

कोरोना प्राकृतिक नहीं

आज पूरा संसार कोरोना से पीड़ित है लेकिन कोरोनावायरस बिल्कुल भी प्राकृतिक नहीं है बल्कि पूर्ण रूप से आर्टिफिशियल है। जापान के नोबेल पुरस्कार विजेता और वैज्ञानिक प्रोफेसर डा. ताशुकु होजो ने अपैल में ही यह दावा कर दिया था कि कोरोना वायरस प्राकृतिक नहीं है। उन्होंने कहा था कि यदि यह वायरस प्राकृतिक होता तो पूरी दुनिया में यह इस तरह तबाही नहीं मचाता क्योंकि विश्व के हर देश में अलग अलग टेंपरेचर होता है और यह सब जगह एक जैसा बर्ताव कर रहा है। चीन जैसे देश में जहां इसका जन्म हुआ है वहां का टेंपरेचर और वातावरण अन्य देशों से अलग है लेकिन ये सब जगह एक जैसी दबंगई दिखा रहा है। यह स्विजरलैंड जैसे ठंडे देश में और रेगिस्तानी इलाकों में भी एक ही गति से फैल रहा है। यदि यह प्राकृतिक होता तो अगर यह ठंडे स्थानों पर फैलता तो गर्म स्थानों पर जाकर दम तोड़ देता। डा. ताशुकु ने आगे कहा कि मैंने अनेक जीव-जंतु और वायरसों पर 40 साल तक रिसर्च की है, मैं दावे के साथ कह सकता हूं कि यह वायरस प्राकृतिक नहीं है, इसे बनाया गया है और यह पूरी तरह से आर्टिफिशियल है। उनका कहना है कि चीन की लैबोरेट्री में भी मैंने 4 साल तक काम किया है, उस लैबोरेट्री के सारे स्टाफ से मैं पूरी तरह जानता हूं, लेकिन कोरोना हादसे के बाद से मैं उन सबको फोन लगा रहा हूं परंतु सभी मेंबर्स के फोन 3 महीने से बंद आ रहे हैं । इससे पता चल रहा है कि सारे लैब टेक्नीशियनों की मौत हो चुकी है और चीन झूठ बोल रहा है। डा. होजो ने यह भी कहा कि यदि मेरी बातें सत्य नहीं हुई तो सरकार मेरा नोबेल पुरस्कार वापस ले सकती है, मैं आज तक की अपनी सारी जानकारियां और रिसर्च के आधार पर 100 प्रतिशत दावे के साथ कह सकता हूं कि कारोना प्राकृतिक नहीं और यह चमगादड़ से भी नहीं फैला है।इसे चीन ने बनाया है और आज जो मैं आज बोल रहा हूं यदि यह बात मेरे मरने के बाद भी झूठी हो तो मेरा नोबेल पुरस्कार सरकार वापस ले सकती है। इससे पता चलता है कि कोरोना वायरस प्राकृतिक नहीं है बल्कि यह तो चीन की साजिश है जिसका परिणाम पूरा विश्व भुगत रहा है। प्रकृति को लेकर यह अवश्य कहा जा सकता है कि कोरोना के कारण लगे लाकडाउन से जब मनुष्य समाज घरों में बंद हो गया था तो पर्यावरण काफी हद तक संवर जरूर गया था।

तूफान आकर चले गए

आज पूरा भारत यह कह रहा है कि तूफान आकर चले गए, पहले अम्फान आया और उसके बाद निसर्ग आया और दोनों आकर चले गए। हमारे यहां कि अम्फान ओडिशा से कटकर निकल गया और निसर्ग ने मुंबई के चेहरे पर कोई गहरी खरोंच नहीं डाली। इन तूफानों की समीक्षा में सबने यही कहा कि तूफान कमजोर पड़ गया और मौत के आंकड़े इसके गवाह हैं । लेकिन यही बात सबसे गलत और बहुत खतरनाक भी है। कोई तूफान यूं ही नहीं गुजर जाता है, वह बहुत कुछ दिखाकर भी जाता है और साथ में यह कहकर भी जाता है कि मैं फिर लौटकर आऊंगा। विज्ञान खोज करके यह तो बताने में सक्षम है कि तूफान आने वाला है, जिससे जान माल का नुकसान कम होता है लेकिन विज्ञान और वैज्ञानिक उसे आने से रोक नहीं सकते। क्योंकि यह सारा खेल जलवायु परिवर्तन का है और जलवायु दोनों ही निरंतर हमारे सामने हैं। जब हम जल और वायु में परिवर्तन करेंगे तो पर्यावरण में परिवर्तन होगा ही क्योंकि यह सब एक संतुलित चक्र में बंधकर चलते हैं गणित में प्रमेय की तरह यह सिद्ध अवधारणा है कि अगर कार्बन की मात्रा बढ़ेगी तो पर्यावरण में गर्मी बढ़ेगी, गर्मी बढ़ेगी तो बर्फ पिघलेगी और समुद्र का जल स्तर बढ़ेगा, फिर समुद्र अपनी हदें तोड़कर धरती पर चढ़ आएगा, गांव-मोहल्ले, नगर, देश सब धीरे-धीरे डूबते जाएंगे और इसका असर धरती पर होगा। धरती के नीचे भी होगा। फसलें मरेंगी,फल-फूलों का संसार उजड़ेगा, अकाल होगा, तूफान होगा, भूकंप होगा, तमाम नए-नए अजनबी वायरसों का हमला होगा इससे पता चलता है कि सारे वायरस जलवायु परिवर्तन की औलाद हैं, यह एक ऐसा सिलसिला है जो ऐसे खत्म होने वाला नहीं है, क्योंकि हम सब कार्बन के कंधों पर बैठे हैं और हमारे विकास के स्वर्णिम महल का भार भी कार्बन ही उठा रहा है। हमने कार्बन को ही विकास का आधार बना रखा है, प्रकृति कार्बन को जहां तक संभव है दबाकर और छिपाकर रखती है क्योंकि वह इसका खतरनाक चरित्र जानती है। हम उसे खोजकर बाहर निकाल लेते हैं, कोयला निकालकर बिजली बनाते हैं, तेल निकालकर कार और हवाई जहाज उड़ाते हैं, धरती से आकाश तक फैले हुए कार्बन का कारण हम मनुष्य ही हैं। हमारे इंजीनियर रात-दिन इस हमले का मुकाबला करने में लगे रहते हैं लेकिन कर नहीं पाते क्योंकि यह उनकी क्षमता से कहीं बड़ा काम है। प्रकृति अपनी क्षमता के भीतर अपने संरक्षण के लिए पूर्ण सक्षम है, इसलिए आज हमें प्रकृति के संदेश को सुनना चाहिए और कार्बन से लड़ने के लिए यज्ञ विधि को अपनाना चाहिए। इसलिए जलवायु को ठीक करने की यज्ञीय परंपरा को अपनाईए। यज्ञ ही एक ऐसा साधन है जिसके माध्यम से हम हर तरह की आपदा को दूर कर सकेंगे।

भूकंप की भनक से भयभीत राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र

भूकंप के संदर्भ में ऐतिहासिक पृष्ठभूमि देखी जाए तो 1954 ने चंबा में 6.3 की तीव्रता, धर्मशाला में 1905 में 7.8 की तीव्रता, 1968 में 5.5 की तीव्रता के भूकंप आए। इसके साथ ही कांगड़ा में भूकंप की निरंतरता चिंता का कारण बनती जा रही है, उत्तरकाशी के पास एक क्षेत्र ऐसा है जो कि आमतौर पर निष्क्रिय हैं लेकिन पिछले 30 सालों से वहां कम तीव्रता के भूकंप लगातार आ रहे हैं।वहीं गढ़वाल में 1803 में 7.7 की तीव्रता तथा 1991 में 6.8 की तीव्रता के भूकंप के झटके भी आए हैं। वर्तमान समय में भूकंप की घटनाएं दिल्ली हरिद्वार क्षेत्र में दर्ज की गई है। इस समूचे क्षेत्र में पिछले 2 वर्षों में 4.9 की तीव्रता वाले 64 भूकंप की घटनाओं को दर्ज किया गया है, जबकि 5. और उससे अधिक तीव्रता की घटनाएं भी घटी हैं यह सारे आंकड़े इशारा कर रहे हैं इस क्षेत्रीय भूभाग में खिंचाव ऊर्जा का प्रभाव लगातार बढ़ रहा है और ऐसा विशेष रूप से दिल्ली और कांगड़ा के बीच हो रहा है। दिल्ली से कांगड़ा 370 और उत्तरकाशी 270 किलोमीटर की दूरी पर है, वहां कोई भूकंप ज्यादा तीव्रता के साथ आता है तो उसका प्रभाव दिल्ली पर भी अवश्य पड़ेगा। विशेष बात यह है कि जब भी कोई भूकंप आता है तो उसे हम प्रकृति का प्रकोप मानते हैं और इसमें मरने वालों को दुर्भाग्यशाली कहकर दुख जताते हैं लेकिन हमें यह अवश्य सोचना चाहिए कि भूकंप में मरने वाले ज्यादातर मकानों में दबकर ही मरते हैं हम एक ऐसी स्थिति में जी रहे हैं जहां तेज गति से शहरीकरण हो रहा है लगातार बस्तियां बसाई जा रही है; विकास में नियामक संस्थाएं स्थापित नियमों को लागू नहीं कर पा रही है; ऐसे में मनमाने ढंग से बनाए गए मकान भूकंप के कारण जानलेवा साबित हो सकते हैं।

- आचार्य अनिल शास्त्री

पृष्ठ 2 का शेष

देश में फैल चुके हैं साइलेंट शिकारी

दूसरा स्टेप कई राज्यों में जब पादरी या पास्टर को भरोसा हो जाता है कि आर्थिक रूप से कमजोर हिन्दू माता-पिता उनके चर्च में आने शुरू हो गए हैं तो वे दिल्ली फोन कर संचालक को उनके बच्चे लेकर जाने के लिए संकेत दे देते हैं। फिर इन बच्चों को बालगृह में भेज दिया जाता है और वर्ष में काफी कम दिनों के लिए ही उनके माता-पिता से मिलने दिया जाता है। दिल्ली और देश के विभिन्न हिस्सों में अवैध रूप से बालगृह चल रहे हैं, जबकि इस संबंध में सर्वोच्च न्यायालय भी कई बार चिंता जता चुका है। लेकिन राज्य सरकारें किसी हमेशा इनके आगे कमजोर दिखाई देती हैं। एक बार सर्वोच्च न्यायालय की वरिष्ठ अधिवक्ता मोनिका अरोड़ा ने एक इन्टरव्यू कहा था कि वोट बैंक की राजनीति के चलते सांसद भी 'एंटी कन्वर्जन लॉ' को लाना नहीं चाहते हैं, यही कारण है कि वर्तमान केन्द्र सरकार के आग्रह पर भी विपक्ष इस कानून को लाने को तैयार नहीं हुआ। यदि हम उत्तर-पूर्व की ओर ध्यान दें तो नागालैंड, मिजोरम और मेघालय में 70 से 80 फीसद तक हिन्दुओं को ईसाई बनाया जा चुका है और ये काम अब भी जारी है। - *सम्पादक*

वामपंथी विचारों पर आधारित एमेजॉन वेब सीरीज की हकीकत

वामपंथी षडयन्त्रों का फिल्मी एजेंडा

...... आजकल तो आजकल तो ऐसे मुद्दों की बाढ़ आई हुई है, जिनमें हिन्दू प्रतीकों पर वैचारिक गंदगी उछाली जा रही है और हम सब या तो चुप हैं या उसके समर्थन में है। एमेजॉन पर दिखाई जाने वाली ऐसी ही एक वेब सीरीज है पाताललोक। जिसको हिन्दू बाहुल्य देश के हृदय में राज किये क्रिकेट के खिलाड़ी विराट कोहली की पत्नी अनुष्का शर्मा, अनुष्का के भाई करनेश शर्मा और पिता अजय शर्मा की मिलीजुली कम्पनी क्लीन स्टेट फिल्म के बैनर तले बनाई गई है। ......

.......दारू पीने वाली आधुनिक वेशभूषा वाली महिला डॉली एक पतिव्रता नारी है जिसके कुत्ते प्रेम के कारण वह अनजाने ही अपने पति के प्राण बचा लेती है। इसलिये सनातन में आदर्श नारी का प्रतीक सावित्री सड़क की आवारा गर्भवती कुतिया भी हो सकती है और दीवाली के पटाखों के शोर से कुत्तों के परेशान होने वाली आधुनिक, वामी विचार की महिला एक पतिव्रता स्त्री हो सकती है। तो सावित्री नाम सड़क पर गर्भवती होने वाले ऐसी कुतिया का नाम हो सकता है जिसके बच्चों के पिता का भी नाम नही पता।.....

रतीय सभ्यता और सनातन का शत्रु वामपंथ एक भूमंडलीय व्याधि है। कोविड काल में अमेरिका में हुए दंगे इसका नवीनतम उदाहरण है। वेदों में गौ मांस-अश्व मांस भक्षण, आर्य बाहरी थे, राम काल्पनिक थे, यज्ञवेदी में मांस आहुति, रावण-महिषासुर पूजन आदि सनातन आर्य सभ्यता आदि समस्त भ्रांतियां वामपंथी विचारधारा की ही देन है। ईस्ट इंडिया कंपनी में नौकरी पाए गुलाम भारतीय काले अंग्रेज बनकर वामपंथी विचारधारा के वाहक बन सनातनी समाज में घुलमिल चुके थे। वामपंथ की सबसे बड़ी ताकत है इनका अवश्य होना क्योंकी यह अलग से कोई पंथ नही अपितु एक वैचारिक षड्यंत्र है जो मानवता और समाजवाद की आड़ में समाज में सरलता से घुस कर जड़े काटता आ रहा है। मानवता की आड़ में किसी भी विषय पर इनके शब्दों के मायाजाल में अच्छे भले समझदार व्यक्ति भी इनकी हाँ में हाँ मिलाने लगते हैं। यदि कोई इनका एजेंडा भांप भी लेता है तो भी वह उसके दूरगामी दुष्परिणामों को नही समझ पाता।

हालांकि कुछ लोगों का मानना है कि वामपंथ आज अपने अंतिम समय में है पर वास्तविकता यह है कि वामपंथी विचार व्यापक रूप से सामाजिक जीवन में इतने समाहित हो चुके हैं कि अब सामान्य लोगों के लिए भेद समझ पाना सम्भव ही नहीं। सबसे दु:खद और चिंताजनक स्थिति यह है कि कॉन्वेंट शिक्षा, मनोरंजन, विज्ञापन, आधुनिकता, नारी स्वतंत्रता, धर्मनिरपेक्षता, सोशल प्लेटफॉर्म आदि के नाम पर सनातन द्रोह का खेल अब अपने चरम पर है। जिसका दु:परिणाम नई पीढ़ी में नास्तिकता की बढ़ती प्रवत्ति है। आधुनिक शिक्षा के वातावरण में पले बढ़े लड़के-लड़कियां वामपंथ के मूल अस्त्र धर्मनिरपेक्षता के नाम पर स्वंय के धर्म के लिए इतने उदासीन हो चुके हैं कि पाताललोक जैसी सनातन विरोधी मूवी को भी सामाजिक बुराई दिखाने के नाम पर हिट बना देते हैं।

आजकल तो ऐसे मुद्दों की बाढ़ आई हुई है, जिनमें हिन्दू प्रतीकों पर वैचारिक गंदगी उछाली जा रही है और हम सब या तो चुप हैं या उसके समर्थन में है। एमेजॉन पर दिखाई जाने वाली ऐसी ही एक वेब सीरीज है पाताललोक। जिसको हिन्दू बाहुल्य देश के हृदय में राज किये क्रिकेट के खिलाड़ी विराट कोहली की पत्नी अनुष्का शर्मा, अनुष्का के भाई करनेश शर्मा और पिता अजय शर्मा की मिलीजुली कम्पनी क्लीन स्टेट फिल्म के बैनर तले बनाई गई है।

पाताललोक के नाम से ही स्वर्गलोक और पृथ्वीलोक सहित सनातन की तीन लोक की अवधारणा पर दिमाग स्वत: ही जाता है। पाताललोक का बैनर ही देवी दुर्गा के बहुहस्तधारी शैली के प्रतिबिंब को काली आकृति के हाथों में सीरीज के आधुनिक हथियार, चाकू, हथौड़ा, मीडिया का माइक, बंदूक, ननचाकू आदि दिखाए गए हैं। सीरीज देखें बिना ही इसके बैनर चित्र पर ही सनातन द्रोह निश्चित दिख रहा है। परन्तु यदि हिंदुओं को इस चित्र में विवाद जैसा कुछ भी नहीं दिखता तो वह स्वयं में उत्तर खोज लें कि यदि इस चित्र में देवी दुर्गा के प्रतिबिंब शैली के स्थान पर क्रॉस में लटके जीजस या अरबी वेशभूषा में किसी नबी के हाथ में हथौड़ा और चाकू पकड़ाया गया होता तो परिणाम क्या होते? शायद वही जो फ्रांस में चार्ली हेब्दों के पत्रकारों का हुआ था? या फिर सेटेनिक वर्सेस पुस्तक आने के बाद सलमान रुश्दी इसके सबसे बड़े गवाह है।

बरहाल यह तो मात्र आरम्भ है क्योंकि 9 एपिसोड की इस वेबसीरीज में अनुष्का ने प्रत्येक एपिसोड में प्रतीकात्मक रूप से ऐसे केस जोड़ कर दिखाए हैं जिनसे हिंदुओं द्वारा अल्पसंख्यक मुस्लिमों पर अत्याचार के भयानक झूठों को अत्यंत धूर्तता के साथ प्रस्तुत करके विदेश में बैठे इन वामियों के आकाओं की यू.एस.सी. आई.आर.एफ. जैसी हिन्दूफोबिया से ग्रस्त संस्थाओं के लिए अपनी वफादारी के प्रमाण सिद्ध कर दिए हैं।

फिल्म की शुरुआत में ही बाटला हाउस कांड में 4 लोग के पकड़े जाने जैसी घटना दिखाई है। जिसमें एक महिला (किन्नर) मैरी लिंग और 3 पुरुष विशाल त्यागी, तोप सिंह तथा कबीर एम हैं, जिनकी धर पकड़ में तत्परता दिखाने वाली सी.बी.आई. उन चारों के निर्दोष होने के सभी साक्ष्य छुपाते हुए उनको साक्ष्य के साथ पाकिस्तानी आतंकवादी सिद्ध कर देती है। रविश कुमार जैसा दिखने वाला पत्रकार पिछले 5 वर्षों से भारत मे मीडिया पर पड़ने वाले दबावों और हमलों को लेकर चिंतित होकर कहता है कि 5 वर्ष पहले तो हम हीरो थे।

ट्रेन में बैठा एक मुस्लिम जिस अखबार के ऊपर टिफिन रखकर खाना खाता है उस अखबार में कार सेवकों की खबर के साथ बाबरी ढांचे के विध्वंश की तारीख जानबूझ कर एजेंडा बनाकर डाली गई है, साथ ही उस निर्दोष मुस्लिम को कार सेवकों द्वारा ट्रेन से घसीटकर हत्या करते दिखलाया है। ऐसी मुस्लिम विरोधी घटनाओं से भयभीत उसी मुस्लिम का पिता भारत में मुस्लिम होने के डर के कारण अपने दूसरे पुत्र का खतना मेडिकल सर्टिफिकेट में बीमारी के कारण कराया दिखाता है और उसके नाम कबीर के साथ मोहम्मद के स्थान पर एम रखकर उसको 'पूरा' मुस्लिम नही बनने देता है।

फिल्म के मुख्य किरदार पुलिस इंस्पेक्टर हाथीराम चौधरी सेकुलर समाज के प्रतिनिधि के रूप में दिखाए गए हैं जो अपनी घरेलू और विभाग की समस्याओं से जूझते हुए, अपने बिगड़े हुए पुत्र से लेकर वरिष्ठ अधिकारी तक के सामने स्वंय का सम्मान बनाये रखने में ही जूझते रहते हैं। यह महोदय हिन्दू धर्म की प्रत्येक बात व्हाटसएप्प पर पढ़ते हैं। जबकि इनका कनिष्ठ इमरान अंसारी जो कि महकमें का इकलौता ईमानदार, मेहनती और बुद्धिमान पुलिस वाला है, जो महकमें में अकेला मुस्लिम होने के कारण अपशब्द सुनने, पुलिस स्टेशन में आरती पर अनमने ढंग से प्रसाद देने, आई.ए.एस. के इंटरव्यू की तैयारी में मुस्लिम होने के कारण लगने वाले डर को स्वीकारने से फेल कर दिए जाने जैसे भेदभाव और मानसिक प्रताड़नाओं के बावजूद आई.ए.एस. में उच्च स्थान करके 'इनकी कम्युनिटी' की मेहनत से सिविल सर्विस में होने वाले सेलेक्शन में मुस्लिमों की मेहनत के प्रमाण सिद्ध करता है।

गुलाब चुनाव चिन्ह वाली पार्टी के मुखिया बाजपेई जी जो कि दलितों के घर खाना खाने के बाद अपनी गाड़ी में रखे गंगाजल से स्नान करके शुद्ध होते हैं। मन्दिर के अंदर देवी माँ के चित्र के आगे बैठकर पुजारी द्वारा मांस पका के परोसना, गन्दी गालियां पंडित और मंदिरों द्वारा यानी सनातन में मांस का स्पष्ट स्वघोषित प्रमाण दे रही हैं।

बाकी दारू पीने वाली आधुनिक वेशभूषा वाली महिला डॉली एक पतिव्रता नारी है जिसके कुत्ते प्रेम के कारण वह अनजाने ही अपने पति के प्राण बचा लेती है। इसलिये सनातन में आदर्श नारी का प्रतीक सावित्री सड़क की आवारा गर्भवती कुतिया भी हो सकती है और दीवाली के पटाखों के शोर से कुत्तों के परेशान होने वाली आधुनिक, वामी विचार की महिला एक पतिव्रता स्त्री हो सकती है। तो सावित्री नाम सड़क पर गर्भवती होने वाले ऐसी कुतिया का नाम हो सकता है जिसके बच्चों के पिता का भी नाम नही पता।

यहां ध्यान देने योग्य बात यह है कि हम ऊपर उल्लेखित किसी भी क्षेत्र से धर्म संस्कार देने की अपेक्षा कदापि नही रखते। परंतु हवस का भूखा सदा पुजारी ही होता है मौलाना या पादरी क्यों नहीं? मजाक सदा किसी पंडित की चोटी और धोती का उड़ता है, किसी ईसाई के क्रॉस और मुस्लिम की टोपी का क्यों नहीं? अपराध सदा मन्दिर में ही क्यों दिखाते हैं और क्यों किसी मस्जिद या चर्च में ही अधर्मी भी धार्मिक बन जाता है? जबकि मुस्लिम देश पाकिस्तान में परवेज मुशर्रफ के शासन में वहां की लाल मस्जिद पर सेना को हमला करना पड़ा था।

मैं किसी पूर्वाग्रह का शिकार होकर नहीं लिख रही हूँ बल्कि एक सोचे-समझे षड्यन्त्र को उजागर कर रही हूँ। हमको किसी अपराधी के सहानुभूति नहीं क्योंकि अपराधी तो अपराधी होता है, वह किसी भी धर्म से हो सकता है, वह किसी भी जाति से हो सकता है। पर हमको समस्या है उन सनातन द्रोहियों से जो जातिवाद, मांसाहार, पंथभेद, जातिभेद, भृष्टाचार, बलात्कार, गुंडागर्दी या अनेकों अपराधों के प्रतीकों में केवल ब्राह्मण का जनेऊ, मंत्रोच्चारण, गंगाजल, त्रिशूल, मंदिर, हवनकुंड, देवी देवता की मूर्तियां, भक्त, तिलक आदि सनातन वैदिक धर्म के प्रतीकों का उपयोग करके ही धर्मनिरपेक्ष मानसिकता का परिचय देने का सनातन द्रोही खेल खेलते हैं। जो लोग एक तरफ स्वंय को धर्मनिरपेक्ष कहते हैं और साथ ही ऐसे सनातन द्रोहियों के षड्यंत्रों की तरफ से अनभिज्ञ या मासूम बने रहने का दिखावा करते हुए चुप्पी साधकर ऐसे लोगो के ही एजेंडों में सहयोग करते हैं। उनसे मेरा प्रश्न है कि अपराधी और अपराध तो किसी भी पंथ का या किसी भी स्थान पर हो सकता है तो टोपी के नीचे सदा अच्छा इंसान और तिलक के पीछे सदा अपराधी ही क्यों? यदि मांस मन्दिर में जनेऊधारी भी पका सकता है तो गौ मांस खाते हुए कभी मस्जिद का मौलाना क्यों नही हो सकता? जनेऊधारी को यदि अवैध संबंध में दिखाया जा सकता है तो टोपी या क्रॉस पहनकर कभी बलात्कारी क्यों नहीं? मेरे पास केवल प्रश्न है उत्तर नहीं!!!

- इंद्रा वाजपेई

व्यवसायिक लोग समाज सेवा से कैसे जुड़े?

(How A Professional Person Can Do The Social Service?)

.....प्रत्येक को यह स्मरण रखना चाहिये कि दान, भोग, नाश ये धन की तीन गतियाँ होती हैं। धन की सबसे अच्छी गति (उत्तमगति) यही है कि उसे अच्छे कार्यों में लगा दिया जाये। इसी दान दी गई राशि से हमारा अगला जन्म बनेगा। .....धन का दूसरा उपयोग यह है कि उसे परिवार के बच्चों को सुशिक्षित बनाने और दूसरे पारिवारिक कार्यों में व्यय करना चाहिये। जो कृपण व्यक्ति न तो दान देता है और न ही परिवार के लिये खर्च करता है उसकी तीसरी अर्थात् नाश होना निश्चित है, उसका धन चोर, लुटेरे, राजा, अग्नि, अभियोग में लग जाता है, शास्त्रों में धन के चार उत्तराधिकारी माने गये हैं।.....

- डॉ. स्वामी देवव्रत सरस्वती

सेवा मानव को मानव से जोड़ने वाली कड़ी है जिसके करने से मन को अपूर्व शान्ति मिलती है। सेवा वही कर सकता है जिसके हृदय में करुणा, दया और परोपकार की भावना है। सेवा परम धर्म है। व्यवसाय या नौकरी पेशे से जुड़े लोग साधन सम्पन्न होते हैं। वैसे भी शास्त्रों में अपनी आय का कुछ भाग सेवा एवं सामाजिक कार्यों में लगाने को कहा है। सरकार ने भी उद्योगपतियों को अपनी आय का दो प्रतिशत सार्वजनिक जनहित के कार्यों में लगाने का नियम बनाया हुआ है। यद्यपि व्यावसायिक लोगों के पास इतना समय नहीं होता परन्तु फिर भी वे कुछ समय निकाल सकते हैं अथवा किसी सेवा भावी संस्था का आर्थिक सहयोग कर सकते हैं।

सेवा के अनेक प्रकल्प और कार्यक्रम देश, काल परिस्थिति के अनुसार चलाये जा सकते हैं। यथा -

1. जिस क्षेत्र में आप रह रहे हैं वहां किन सुविधाओं का अभाव है, यह जानकर आप किसी सेवाभावी संस्था का ध्यानाकर्षण कर आर्थिक योगदान अथवा समय दे सकते हैं। जैसे शिक्षा के क्षेत्र में निर्धन मेधावी छात्रों को छात्रवृत्ति, वस्त्र, पुस्तकें वितरित करना। उन्हें ट्यूशन पढ़ाना अथवा किसी योग्य शिक्षक से पढ़वाना।

चिकित्सा- नि:शुल्क चिकित्सा उपलब्ध कराना, विकलांग लोगों को कृत्रिम अंग लगवाना, चश्मे वितरण करना, चिकित्सा के शिविर लगाना आदि।

2. सामाजिक कार्यों के लिये संसाधनों की आवश्यक होती है। आप जिस विभाग या कम्पनी में हैं उनके अधिकारियों से मिलकर कुछ सुविधा प्राप्त कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त अपनी आय का एक निश्चित भाग सेवा कार्यों के लिये अलग निकालें तथा अपने मित्रों को भी प्रेरित करें। इस राशि को बैंकों में जमा कराने के लिये संस्था का पंजीकरण कराना बहुत आवश्यक है।

3. आपकी जैसी रूचि है उसके अनुसार किसी संस्था के सदस्य बन जायें। जहां ऐसी संस्थान न हो वहाँ नवीन संस्था को पंजीकरण करा कर उसके माध्यम से कार्य कर सकते हैं। आयकर छूट की सुविधा प्राप्त कर लेने से लोगों को आपको दान देने में सुविधा होगी।

4. यह कार्य केवल जनता के हित के लिये ही किया जाना चाहिये। केवल प्रसिद्धि पाने, आयकर बचाने और अपना उल्लू सीधा करने वालों से जनता का विश्वास उठ जाऐगा। और फिर वे ईमानदारी से भी सेवा करने वाले लोगों को सन्देह की दृष्टि से देखने लगेंगे।

5. सामाजिक कार्य बहुजन हिताय बहुजन सुखाय होना चाहिये जिसमें जाति, धर्म या वर्ग विशेष के स्थान पर सभी का हित होता हो।

6. आपने जिन वस्त्रों को पहनना छोड़ दिया है उन्हें सुरक्षित रख लें तथा दूसरे लोगों को भी ऐसी ही प्रेरणा दें। जब बहुत सारे वस्त्र एकत्रित हो जायें तो उन्हें अभाव ग्रस्त लोगों में विरतरित करा दें। एक देश में कुछ स्थान निश्चित किये गये हैं जहाँ ऐसे वस्त्रों को लोग दीवारों से लगी खूंटियों पर टांग जाते हैं और जिन्हें जैसी आवश्यकता है वे वैसे ही वस्त्र वहां से ले जाते हैं।

7. प्रत्येक को यह स्मरण रखना चाहिये कि दान, भोग, नाश ये धन की तीन गतियाँ होती हैं। धन की सबसे अच्छी गति (उत्तमगति) यही है कि उसे अच्छे कार्यों में लगा दिया जाये। इसी दान दी गई राशि से हमारा अगला जन्म बनेगा।

धन का दूसरा उपयोग यह है कि उसे परिवार के बच्चों को सुशिक्षित बनाने और दूसरे पारिवारिक कार्यों में व्यय करना चाहिये। जो कृपण व्यक्ति न तो दान देता है और न ही परिवार के लिये खर्च करता है उसकी तीसरी अर्थात् नाश होना निश्चित है, उसका धन चोर, लुटेरे, राजा, अग्नि, अभियोग में लग जाता है, शास्त्रों में धन के चार उत्तराधिकारी माने गये हैं।

चत्वारो धन दायादा धर्माग्नि नृप तस्करा:।
तेषां ज्येष्ठावमानेन जय: कुप्यन्ति बान्धका:।।

धर्म, अग्नि, राजा, तस्कर ये चार धन के दावेदार होते हैं। जब धर्म के कार्यों में धन नहीं लगाया जाता तो उसके शेष दावेदार कुपित होकर धन को लील लेते हैं।

8. अनेक सेवाभावी संस्थायें सेवा के प्रकल्प चलाती हैं जैसे नेत्र चिकित्सा के शिविर लगाना, चश्में वितरित करना, रोगों की जांच करवाना, विकलांग लोगों को कृत्रिम अंग प्रदान करना। आप उनसे सम्बन्धित होकर आर्थिक सहायता या सेवा कार्यों में योगदान कर सकते हैं।

9. जिन प्रतिभाशाली निर्धन विद्यार्थियों को प्रतियोगिता वाली परीक्षाओं में धनाभाव के कारण वंचित रहना पड़ता है ऐसे विद्यार्थियों के लिये नि:शुल्क कोचिंग क्लासों की व्यवस्था की जा सकती है। उन विषयों से सम्बन्धित अनुभवी सेवानिवृत्त अध्यापकों से नि:शुल्क ट्यूशन पढ़ाने का सहयोग लिया जा सकता है। इस उपकार को वे विद्यार्थी आजन्म स्मरण रखेंगे और आगे वे भी ऐसी संस्थाओं की आर्थिक सहायता करेंगे।

10. कुछ जनहित के कार्य सरकार की ओर से भी चलाये जाते हैं और सेवाभावी सामाजिक संस्थाओं से इन कार्यों में उनका सहयोग करने का निवेदन भी किया जाता है। ऐसे अवसर पर आपकी संस्था सरकार का सहयोग कर सकती है। इसका एक लाभ यह होगा कि उच्च अधिकारियों की दृष्टि में आपकी संस्था आ जाने से आर्थिक सहायता भी मिलेगी।

- क्रमश:

Makers of the Arya Samaj : Swami Shraddhanand Ji

Continue From Last issue

The original book 'Makers of Arya Samaj' written by D.C.S. was published long ago in 1935. Much time has elapsed since then. Govind Ram Hasanand published an edition in 2010, but its contents remained the same. It is therefore considered necessary to bring out this latest edition with some modification and correction wherever required. In this present edition, several new pages have been added, which provide more information in order to highlight important facts and features in respect ofthe Makers ofArya Samaj. It is hoped that the lives of these extraordinary great men who are the outstanding leaders ofthe ARYA SAMAJ will inspire our present generation to make some useful contribution in the service of our country and the mankind.

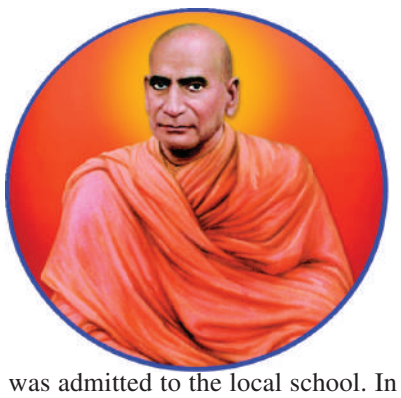

But the most interesting thing was that at this time he began to worship, like his father, the god Shiva. He also read regularly the Ramayana, which had a great deal.of influence on him. This was at the time when Swami Dayanand visited Benares. But neither Munshi Ram nor any other member of his family went to see or hear him. It was said that the Swami was a godless sorcerer. It was dangerous to go near him because he made other people give up their faith in God.

From Benares L. Nanak Chand went to Banda. There Munshi Ram was put in the local school. But he was made to read Urdu and Persian instead ofHindi. This did not mean that he lost his interest in Hindi. On the other hand, he came to have a greater interest in it. He read it for pleasure at home.

After some time he fell dangerously ill. His parents lost all hope of his life. They sent for many doctors, but not one of them could do much for him. At last they called in a physician who was a God-fearing man. He treated his patients free. But this was not the only thing he did. Every evening he gave readings from the holy books. People came in large numbers to listen to him. His medicine cured Munshi Ram, so the parents felt very grateful to him. They also began to listen to his readings. "These," wrote Munshi Ram afterwards, " left a deep mark on my character." All his life he felt grateful to this gentleman, for he taught him what goodness really is.

After leaving Banda, L. Nanak Chand held a post at Mirzapur. Near this place a fair was held in honour of a goddess. Munshi RaI)1 often went there in the company of his father. He saw many interesting things. He came across persons who did much evil in the name of religion. The character of his father's orderly interested him most of all. He was a Brahmin, yet he did many evil things. He told lies, he gambled, he drank, he took bribes, and he cheated people. He still called himself religious because he often went to the temple of the goddess. Even the boy Munshi Ram failed to understand this man.

L. Nanak Chand again went to Benares. But this time he occupied a higher position than before, and all the rich people of Be nares were very anxious to please him. It being the end ofthe rainy season, Benares was the scene of many festivities. Munshi Ram had his share of them. He attended feasts, he rode on elephants, and saw many performances. All this pleased him very much.

In this way his studies were neglected for a few months. But after a time he was put in a local school. There he began to read English. His life in school had a good effect upon him. It taught him to be regular. It is said that at this time he got up early in the morning. Then he went to the river for a bath. He also took exercise in an Indian gymnasium. After this he went to the temple of Vishwa Nath in order to say his prayers. Then he went home and had his breakfast. After this he went to school. This regularity he kept up for a long time.

Soon L. Nanak Chand left Benares for Balia. There Munshi Ram was admitted to the local school. In that school he read English with a Bengali gentleman, who took great interest in him. So his knowledge of English improved very much. For his ability in English he was twice awarded prizes. In addition to this, Munshi Ram began to learn wrestling. L. Nanak Chand was so pleased with his son's ability that he thought of sending him to a better school.

Munshi Ram was then sent to the Queen's Collegiate School at Benares At that time this was the best school in the whole of the province, and Munshi Ram felt glad to join it. For some time he worked here very regularly at his books. He also paid much attention to his health. The result was that he was liked at school as well as elsewhere.

To be continued.....

With thanks By:
"Makers of Arya Samaj"

पृष्ठ 3 का शेष

महासंग्राम की अनसुनी गाथा

यमराज- तो तुम्हें किसने, कैसे, और क्यों बनाया?

कोरोना- भगवान् मैं उसका नाम नहीं लेना चाहता,पर एक शक्तिशाली देश के शासक ने अपने वैज्ञानिकों को आदेश दिया कि 'कुछ ऐसे जैविक हथियार बनाओ जिससे हम दुश्मनों पर आक्रमण कर सकें और इल्जाम भी हमारे ऊपर न आए।' तभी वैज्ञानिकों ने प्रयोगशाला में मुझे बनाया।

यमराज- तो फिर तुम वैज्ञानिकों के चुंगुलों से कैसे निकले?

कोरोना- यह एक लंबी कहानी है महाराज! कभी फुर्सत के समय बताऊंगा। अभी इतना ही जानिए कि मैंने ही इस मानव जाति का यह हाल किया है।

यमराज- शाबाश छोटे, शाबाश! मैं तुम से बहुत खुश हूं। क्या इस मनुष्य के नाश में तुम्हें कोई अड़चन तो नहीं आई?

कोरोना- आ रही है न महाराज! एक तो अब मनुष्य सावधान हो गया। मास्क, पीपीई किट, सेनेटाइजर आदि के प्रयोग से वह काफी हद तक सुरक्षित हो गया।

यमराज- चलो इसका भी कोई उपाय ढूंढ़ लेंगे। इस के अलावा कोई और दिक्कत?

कोरोना- हां महाराज! इस दुनियां में बहुत से लोग शाकाहारी हैं, उन पर मेरा आक्रमण कोई असर नहीं कर रहा। उनके शरीर में मुझसे लड़ने की क्षमता कुछ ज्यादा ही है। उनके शरीर में प्रवेश करते हुए खुद मेरी ही मृत्यु हो रही है।

यमराज- यह तो एक बड़ी बाधा उत्पन्न हो गई है।

कोरोना- महाराज! इससे भी बड़ी एक और समस्या है?

यमराज- वह क्या?

कोरोना- कुछ लोग अपने घरों में हवन करते हैं। गायत्री मन्त्र, महामृत्युंजय मन्त्र, और वेद के अनेक मन्त्रों के साथ औषधियुक्त सामग्री व गौघृत की आहुतियां डालते हैं। वहां तो हम क्षण भर भी टिक नहीं पा रहे हैं।

यमराज- हवन में इतनी बड़ी शक्ति है?

कोरोना- जी महाराज! वे लोग गाय के घी से हवन करते हैं। गाय के दस ग्राम घी में हमारी एक हजार प्रजातियों को नष्ट करने की शक्ति है और जड़ी-बूटी से बनी सामग्री में तो इतनी शक्ति है कि हम उस के एक किलोमीटर की परीधि के अंदर प्रवेश ही नहीं कर पा रहे हैं।

यमराज- फिर तो मनुष्य को मारने का तुम्हारा उद्देश्य धरा का धरा रह जायेगा।

खैर! यम के दरबार में सब जीवों शुभाशुभ कर्मों का प्रतिफल अवश्य दिया जाएगा

कोरोना- महाराज! अब आप ही बताओ कि हम क्या करें? अभी तो कम ही लोग हवन कर रहे हैं, कहीं ज्यादा लोग हवन करने लगे तो हमारा क्या होगा। महाराज! आप ही हमारी रक्षा कर सकते हैं। इस यज्ञ से हमारी रक्षा करो महाराज रक्षा करो।

यमराज- प्यारे दूतो! हवन की सुगंधि से विषैले प्राणी और तुम सबकी रक्षा संभव नहीं है। मैं तो हजारों-लाखों-करोड़ों वर्षों से देख रहा हूं - चाहे महादेव शिव ब्रह्मा, विष्णु, राम, कृष्ण जैसे देवात्मा पुरुष हों या रावण, कंस या हिरण्याक्ष जैसे राक्षसी प्रवृत्ति के लोग सभी ने यज्ञानुष्ठान करके शक्तियां पाई हैं।

मैं आप सबको भी यही सलाह देता हूं कि हवन और हवन करने वालों से दूर ही रहो। हवन करने वाले और शाकाहारियों को छोड़कर अन्य लोगों पर दृष्टि रखो और उन्हीं पर आक्रमण करो। यदि हवन के संपर्क में आ गए तो तुम जैसे विषैले प्राणियों का नाम लेने वाला कोई नहीं बचेगा।

- आचार्य हेमकुमार विद्यावाचस्पति

प्रथम पृष्ठ का शेष

आहूजा, आ. अमृता आर्या, श्रीमती सुमन गुप्ता, श्रीमती सविता खुराना, श्रीमती हर्ष आर्या, श्रीमती वनिता चावला, श्री राकेश भटनागर, श्री जगवीर सिंह आर्य, श्री ओम प्रकाश अरोड़ा, डॉ. बी डी लाम्बा, श्री प्रवीण बत्रा, श्री आदर्श कुमार, श्री विकास कुमार शर्मा, श्री देव मित्र आर्य। आप सभी ने बहुत ही अच्छे ढंग से संयोजित किया। प्रतिदिन श्री सुरेश चंद गुप्ता श्रोताओं की शंकाओं का संकलन कर डॉ विनय विद्यालंकार जी के पास पहुंचाते रहे हैं। श्री नीरज आर्य कार्यक्रम को सुंदर बनाने में सहयोग देते रहे, आर्य गुरुकुल तिहाड़ गांव के ब्रह्मचारियों ने सुंदर यज्ञ का आयोजन किया। तकनीकी रूप से श्री बिपिन भल्ला ने अथक सहयोग किया, मैं आप सभी का हृदय की गहराइयों से बहुत-बहुत धन्यवाद करता हूं और शत-शत नमन करता हूं।

- सतीश चड्डा, महामन्त्री, संयोजक

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

• प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
• विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
• स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650522778
E-mail : aspt.india@gmail.com

पृष्ठ 3 का शेष

क्या महिलाएं कर सकती हैं गायत्री मन्त्र जाप

आम तौर पर लोगों को पता ही नहीं चलता है कि संत किसे कहते हैं और महात्मा किसे, विद्वान किसे कहते हैं और तपस्वी किसे, साधक किसे कहते हैं और कथावाचक किसे। दरअसल आज जितने कथावाचक हैं वे ही संत हो गये और वही महात्मा भी और इसका फायदा उठाकर ये कथावाचक कमाई कर रहे हैं और अपने धर्म का नाश भी। कथाओं में शेरो-शायरी, चुटकुले और मनोरंजन के साधन के साथ अल्लाह, मौला, नमाज, अजान करके भीड़ जुटाने लगे ताकि हर तरह की सोच वाले आकर इन्हें थैला भेंट करें।

अब इन्होंने आसान तरीका ढूढ़ लिया जैसे फिल्म का विज्ञापन करना हो तो हिंदू धर्म को अपमानित कर दो फिल्में हिट हो जाती हैं, ठीक वैसे ही इनके साथ-साथ औरों ने इसे औजार बना लिया। ऐसे युवा युवतियां आजकल वृंदावन के कथा प्रशिक्षण संस्थानों से छः महीने का कोर्स करते हैं और रंग विरंगे तिलक लगाकर या कहें कि फैशनेबल तिलक लगाकर आजकल टीवी चौनलों पर आ जाते हैं बस जरूरत है किसी को प्रायोजित करने की। चूँकि ये लोग शुरू-शुरू में कम पैसे में आ जाते हैं इसलिए कथा कमेटियों को भी कुछ पैसे बच जाते हैं और इन्हें भी टीवी चौनलों पर लोकप्रियता मिलती है तो ऐसे गठजोड़ से छोटे-मोटे कथाकार को उनसे प्रेरणा क्यों न मिले? परिणाम है कि कथा वाचन और कथा श्रवण अब उतना महत्वपूर्ण नहीं रहा जितना महत्वपूर्ण हो गया लोगों का मनोरंजन और ये लोग धर्म की आड़ में मनोरजन कर रहे हैं। न इन लोगों को अपने धर्म का ज्ञान, न इन्हें व्यक्तिगत ज्ञान, बस माइक सामने लगा दो इनकी दो कौड़ी की स्क्रिप्ट चालू हो जाती है।

इसलिए इनके जाल में मत आइये अपने निज कर्त्तव्यों का पालन कीजिए। आप स्वयं अपने भाग्य निर्माता हैं, अपना कल्याण स्वयं कीजिए। आप महिला हो या पुरुष छोटे हो या बड़े गायत्री मन्त्र महामन्त्र है मानसिक और आध्यत्मिक उन्नति की और ले जाता है। सुबह उठकर पांच मिनट जरुर जाप कीजिये इससे आपके मन को शांति और इन ढोंगियों के मुंह पर तमाचा जरुर लगेगा।

- राजीव चौधरी

शोक समाचार

स्वामी धर्ममुनि जी दुग्धाहारी का निधन

आर्यजगत् के वैदिक विद्वान, वरिष्ठ संन्यासी, आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ के अधिष्ठाता एवं आत्मशुद्धि पथ के प्रधान सम्पादक स्वामी धर्ममुनि जी दुग्धाहारी का पी.जी.आई. अस्पताल रोहतक में लम्बी बीमारी के उपरान्त दिनांक 21 जून, 2020 को निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। स्वामी जी अपने आश्रम में लोक कल्याणार्थ नेत्र चिकित्सालय, वृद्धाश्रम, बाल कल्याण आश्रम एवं विक्लांग सेवा के अनेक सेवा कार्य संचालित करते थे।

श्री अजय अग्रवाल जी को मातृशोक

आर्य समाज बिड़ला लाइन कमला नगर के मंत्री श्री अजय अग्रवाल जी की माता जी एवं सभा प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी की ज्येष्ठ बहन, आर्यसमाज बिडला लाइन्स की वरिष्ठ सदस्या श्रीमती सुमित्रा देवी जी का 23 जून 2020 को अकस्मात् निधन हो गया है। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के साथ किया गया।

श्री वेद प्रकाश गोगिया जी को पत्नीशोक

आर्यसमाज मॉडल बस्ती शादीपुरा द्वारा संचालित पुष्पावती पुरी आर्य पब्लिक स्कूल के कोषाध्यक्ष श्री वेद प्रकाश गोगिया जी की धर्मपत्नी श्रीमती रंजना गोगिया जी का दिनांक 25 जून, 2020 को अकस्मात निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के साथ पंचकुइयां रोड शमशान घाट पर किया गया।

प्रिं. मंगतराम मेहता का निधन

आर्य समाज मॉडल टाउन के वरिष्ठ उपप्रधान व महात्मा सत्यानंद मुंजाल आर्य कन्या गुरुकुल, शास्त्री नगर, लुधियाना के कुलपति प्रिंसीपल मंगतराम मेहता जी का 16 जून 2020 को निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। उनकी स्मृति में शांति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 19 जून करे आर.एस. मॉडल स्कूल में सम्पन्न हुई।

श्री रवीन्द्र आर्य का निधन

आर्यवीर दल गाजीपुर (उ.प्र.) के जिला कोषाध्यक्ष श्री रवींद्र आर्य जी का उनके निवास सुभाष नगर गाजीपुर पर 22 जून, 2020 को निधन हो गया।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दुःख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 22 जून, 2020 से रविवार 28 जून, 2020

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2018-19-2020

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 25-26 जून, 2020

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2018-19-2020

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 24 जून, 2020

प्रतिष्ठा में,

कोरोना से ज्यादा कोरोनिल से डरने का कारण

संपूर्ण विश्व में योग गुरु स्वामी रामदेव जी एक ऐसी प्रतिष्ठित महान विभूति हैं जो सदा-सर्वदा मानवता की भलाई के लिए एक से बढ़कर एक महान कार्य कर रहे हैं। पतंजलि योगपीठ हरिद्वार द्वारा निर्मित आयुर्वेदिक औषधियां देश विदेश में मानव मात्र को आरोग्यता प्रदान करने के लिए प्रसिद्ध है। किंतु जब आज संपूर्ण भारत में और विश्व में कोरोना वायरस के कारण मानव जाति त्रस्त है और स्थिति इतनी भयावह कि जब डब्ल्यूएचओ और तमाम साइंटिस्ट डॉक्टर दवाइयों की कम्पनियां किसी भी प्रकार की कोई वैक्सीन खोजने में अब तक सफल नहीं हुई हैं, तब स्वामी रामदेव जी कोरोनिल के नाम से एक महत्वपूर्ण दवाई लेकर आए जिसका भारत में स्वागत करने के बजाय घोर विरोध शुरु हो गया। इसका कारण क्या हो सकता है?

पतजंलि योगपीठ हरिद्वार द्वारा निर्मित आयुर्वेदिक औषधि कोरोनाकिट लाँच करते स्वामी रामदेव जी, आचार्य बालकिशन एवं रिसर्च अधिकारी

पतंजलि योगपीठ द्वारा कोरोनिल के क्लीनिकल ट्रायल की जानकारी भी आयुष मंत्रालय को सौंप दी गई है और स्वयं योग गुरु बाबा रामदेव जी ने दवाई की लॉन्चिंग के टाइम चिकित्सकों के समूह के साथ यह सार्वजनिक भी किया कि अब तक इस दवाई का कोरोना के मरीजों पर ट्रायल भी किया गया है जिसका परिणाम बहुत ही सकारात्मक और लाभप्रद सिद्ध हुआ है। स्वामी जी ने बताया की यह दवाई 3 दिन में 67 परसेंट और 7 दिन मैं 100% कोरोना मरीज को लाभ पहुंचाने में सक्षम है। लेकिन फिर भी राजस्थान, मुजफ्फरनगर और महाराष्ट्र सहित कई स्थानों पर इस आयुर्वेदिक औषधि का भरपूर विरोध किया जा रहा है। इससे यही प्रतीत होता है कि लोग कोरोना से ज्यादा कोरोनिल से डर रहे हैं और इसका कारण और कुछ नहीं केवल यही है कि आयुर्वेद जो भारत की वैदिक परंपरा का अजस्र स्रोत है वह जीत न जाए और जितनी भी एलोपैथिक दवाइयों की कंपनियां हैं वे हार न जाएं।

पतंजलि योगपीठ द्वारा कोरोनिल के लांच होने से पूर्व सोमवार को ग्लेनमार्क फार्मा ने कोरोना की दवाई निकाली और उन्होंने 103 रुपये की एक गोली और पूरा पैकेट 3500 रुपए कीमत पर लांच किया। लेकिन मजाल है किसी मंत्रालय ने उसके दावे पर सवाल खड़ा किया हो? किसी ने उसका कोई सबूत मांगा हो? और यह भी पूछा हो की यह दवाई कितनी कारगर है, और स्वामी रामदेव जी ने कोरोना की दवाई केवल 535/- रुपये मात्र में देने की बात की है और पूरी विश्वसनीयता के साथ मानवता की भलाई के लिए यह कार्य किया है लेकिन फिर भी उनका घोर विरोध इस बात का प्रमाण है कि भारत में आज भी वैदिक सिद्धांतों का विरोध करना और किसी भी हद तक विरोध करना लोगों को अच्छा लगता है चाहे इसकी कितनी भी बड़ी कीमत क्यों ना चुकानी पड़े। आर्य समाज स्वामी रामदेव जी के इस परोपकारी कार्य के साथ अपनी पूरी सहानुभूति और सहयोग की भावना को समर्पित करता है। भारत सरकार से यह अपील भी करता है की रामदेव जी द्वारा निर्मित कोरोना की दवाई का शीघ्र अतिशीघ्र परीक्षण करके उसे बाजार में उतारा जाए जिससे मानव समाज इस कोरोना की महामारी से बच सके और चारों तरफ सुख शांति का वास हो।

- विनय आर्य, महामन्त्री

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह